International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 11 Issue 10, October 2021
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

कुबेरनाथ राय की लोक संबंधी दृष्टि

सुजाता कुमारी
Mphil(हिंदी)
महात्मा गाँधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, बिहार

भाव जब जटिल हो, तो भाषा स्वतः जटिल हो जाती है। और किसी पर यह पंक्ति सटीक बैठती है। शुरुआती दौर में निबन्धों की धूम रही। आचार्य रामचंद्र शुक्ल को भी लिखना पड़ा-
"यदि गद्य कवियों या लेखकों की कसौटी है तो निबन्ध गद्य की कसौटी है।(1)

शुरुआती दौर से ही निबंध के जो विषय रहे वे अपने समाज और संस्कृति से जुड़े हुए रहे। निबन्ध की यह यात्रा भारतेंदु से शुरू होकर महावीर प्रसाद द्विवेदी, रामचन्द्र शुक्ल, हजारीप्रसाद द्विवेदी, विद्यानिवास मिश्र और कुबेरनाथ राय के पश्चात भी निरन्तर चलती रही है।

इनमें कुबेरनाथ राय एक ऐसे निबन्धकार रहे जिन्होंने अपना सर्वस्व निबन्धों को ही सौंप दिया। जिन्होंने जटिल विषय के बावजूद भी उसके भाव को सरल ढंग से प्रस्तुत किया। उनके कुछ निबन्ध संग्रह है - प्रिया नीलकंठी, रस आखेटक, गंधमादन, विषाद योग, निषाद बाँसुरी, पर्णमुकुट, महाकवि की तर्जनी, कामधेनु, पत्र मणिपुतुल के नाम, मनपवन की नौका आदि। जिनमें उन्होंने गंगातीरी लोकजीवन, भारतीय साहित्य का गहन अध्ययन, पूर्ण पांडित्य तथा भारतीय और पाश्चात्य साहित्य की गरिमा के साथ भाषा का भी नवीन संस्कार किया है।

किसी भी संस्कृति में दो तरह के लोग होते हैं एक वे जो सम्पन्न होते हैं, एक वे जो कृषि कर्म या कुछ काम-धाम करके कमाते खाते हैं। अपने निबन्ध "लोक संस्कृति" में वे इसी बात को चिन्हित करते हैं- "वास्तव में संस्कृति के दो भेद हैं परम्परागत और आधुनिक। परम्परागत संस्कृति के दो उपभेद है- अभिजात और लोक संस्कृतियां। लोक संस्कृति का केंद्र है कृषक और जन्मभूमि है ग्राम। अभिजात संस्कृति का केंद्रीय पुरुष है नागरिक और जन्मभूमि है नगर। इसके विपरीत आधुनिक संस्कृति का केंद्र है- मशीन और उससे जुड़ा है- श्रमिक, मध्यवर्ग, बुर्जुआ और पूंजीपति।" (2)

कुबेरनाथ राय के यहाँ लोक के कई पक्ष दिखाई देते हैं-
लोक में "चोहरा" या "सोहरा" गीत का विशेष महत्व है। अपने निबन्ध "चंडी थान! पुनः चंडी थान" में राय जी उदाहरण सहित कहते हैं :-
"कबन देवी चलेली डोलिया से डंडिया
कवने नेतना ओहारल हो ना...

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 11 Issue 10, October 2021
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

इसे 'सोहर गीत' कहते हैं। यह स्वर उस जाति की लोकधुन है जिसे चेरो, चोहरा या सोहरा कहा जाता है। कभी इस नस्ल के लोग समूचे विंध्यारण्य तथा दक्षिण बिहार में फैले हुए थे। जिस सोहर गीत को हम बिहार, उत्तर प्रदेश के लोग उल्लास के अवसर पर गाते हैं। उसी गीत को चेरो रमणिया भीख मांगने के समय में गाती है।
जिस पान-ताम्बूल, फूल चंदन आदि का हमारे लोक में विशेष प्रयोग होता है राय जी ने उसका वर्णन अपने निबन्ध "पान-ताम्बूल" में करते हुए उसे द्रविड़ का दिया हुआ बताते हैं। 'पान-ताम्बूल' शब्द की उत्पत्ति से लेकर उसके अर्थ के बदलने तक का वर्णन राय जी करते हैं। इसी निबन्ध में वो चौरसिया जाति का भी वर्णन करते हैं जिनका कार्य पान बनाना रहा है।

"वास्तव में पान के लिए पूरा शब्द है- 'ताम्बूल पर्ण'। इनमें से हिन्दी वालों ने मात्र 'ताम्बूल' को पान के अर्थ में ग्रहण किया है। सुपारी के लिए पूरा शब्द है- ताम्बूल फल और उधर असम प्रदेश में इस 'ताम्बूल' का असमिया रूपांतर 'तामोल' या 'तामूल' मात्र सुपारी के लिए ही चलता है।"(3)

वहीं "यम द्वारे महाघोरे" निबन्ध में वे गोसाई गाँव का वर्णन करते हुए तांतियों की बस्ती की बात करते हुए वहाँ के लोगों का मुख्य काम तांत की साड़ी तैयार करना बताते है। और लोक में तैयार हस्त निर्मित वस्तुओं का झलक प्रस्तुत करते हैं।
लोक शिल्प के राय जी शुरू से समर्थक रहे हैं। 'फागुन डोम' नामक निबन्ध में वे हस्त शिल्प के प्रशिक्षण की बात करते हैं।

"लोक-शिल्प के प्रति उपेक्षा की समस्या के पीछे दो महत्वपूर्ण तथ्य हैं। प्रथम तो यह कि लोक शिल्प के ग्रामीण कलाकारों को नव-बोध और नव रुचि तथा नयी शैलीगत उद्भावना के लिए कोई प्रशिक्षण नहीं। वे अब भी हज़ार वर्ष पूर्व की 'बाबावाली' डिजाइनों पर अमल कर रहे हैं।"(4)

"लोक सरस्वती" नामक निबन्ध में वे सरस्वती बनाने वाले शिल्पी का वर्णन करते हुए लोक सरस्वती द्वारा प्राप्त विद्या किताबी नहीं बल्कि उपनिषद या फिर पास बैठकर सीखी जाने वाली विद्या बताते हैं। इसी में वे लोक संस्कृति और आभिजात्य संस्कृति की भिन्नता को स्पष्ट करते हुए बताते हैं कि - "लोक का केंद्र है कृषक और जन्मभूमि है ग्राम। वहीं आभिजात्य संस्कृति का केंद्रीय पुरुष है नागरिक और जन्मभूमि है नगर।"(5)

राय जी की यह विषेशता रही कि वे जाति का वर्णन करने में कभी कतराये नहीं।उन्होंने इस विषय पर खुलकर लिखा। उनकी दृष्टि में जाति भी लोक का एक अभिन्न हिस्सा है। "अभिरिका" नामक निबन्ध में वे अहीरों (ग्वालों) के लोकजीवन की बात करते हैं। गाँव की अहीर जाति के लोग गाँव में बैठे-बैठे ही सुंदर देश की कल्पना करते हैं।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 11 Issue 10, October 2021
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

राय जी भी उनके स्वप्न में भागीदार बनते है। इसी निबन्ध में वे सीवान में इकट्ठे होकर टुकड़ी खाने का भी वर्णन करते हैं।

"सत्तुखोर आर्य" निबन्ध में वे भोजपुरी क्षेत्र में खाये जाने वाले सत्तू से बनी 'ढूंढी और बाटी' की महत्ता का वर्णन करते हैं।

वहीं, निषाद बाँसुरी निबन्ध की शुरुआत राय जी 'चंदर माझी' नाम के नाविक से करते हैं। नाविकों के प्रति राय जी के मन में एक विशेष आकर्षण भाव था। उनके रीति-रिवाजों, उनके लोक गीतों का वर्णन राय जी कई स्थानों पर करते हैं। निषाद बाँसुरी में वे एक लोक गीत का उल्लेख करते हैं-

"राधे-रुकमिनि चलेनी नहनवा, सुखा के गंगा ना।
भइली बलुआ क रेतवा, सुखा के गंगा ना!
रोवेली अटइन-रोवेली बटइन,
रोवे कुआँ क पनिहारिन ना।
मुँहवा रुमलिया देके रोवेला केवटवा
कि मोरी बोझल नइया अगम भइली ना!"(6)

झिझरी आदि का वर्णन करते हुए निषाद के जीवन, उनके विश्वास, आचार-विचार आदि का विस्तृत वर्णन राय जी इस निबन्ध में राय जी प्रस्तुत करते हैं। राय जी इस धरती का आदि-मालिक निषाद को ही मानते हैं। अन्य प्रदेशों के निषाद की अपेक्षा गांगातीर के निषादों के चाल-चलन, कथन-भंगिमा आदि में विशिष्ट गौरव झलकता है। अलग-अलग जातियों के अपने-अपने लोक-काव्य है। अहीरों की 'लोरकी', कहारों का 'बिहुला' आदि। राय जी भारतीय खेती का मूल निषादों को बताते हैं।इसी निबन्ध में उन्होंने लोकगीत का सुंदर उदाहरण प्रस्तुत किया है।
"आधी रतियाँ रे डोमिनिया,
आ रे, आधी रतिया ना...

इस गीत में उन्होंने डोम और डोमिनिया के बीच वार्तालाप को प्रस्तुत किया है। लोक के संदर्भ में राय जी यह मानते हैं
कि जैसे-जैसे लोक का विस्तार होता गया, आर्य और आर्येत्तर कबीले आपस में समन्वित होते गये। लोक संस्कृति के रूप का भी विस्तार होता गया और कर्म कांडों का स्वरूप भी उसी के अनुरूप ढ़लता गया। वे मानते हैं कि भारत की धर्म साधना तथा लोक संस्कार एवं शिल्प-संस्कार बाहर से आये या इम्पोर्टेड नहीं है।

शिशु-वेद नामक निबन्ध में वे लिखते हैं कि शिशु-वेद किसी पुरुष या व्यक्ति विशेष की रचना नहीं बल्कि परम्परा से चले आ रहे हैं। उन्होंने अलग-अलग क्षेत्र में शिशु के लिए गाये जाने वाले गीत का वर्णन किया है। बंगाल में शिशु

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 11 Issue 10, October 2021
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

काव्य सिर्फ बच्चों तक ही सीमित नहीं है। वयः संधि की देहरी पर स्थित लड़कियों तथा विवाहिता युवतियों विशेषतः नव वधुओं में 'छड़ा बोल' रचने का खूब रिवाज है। राय जी बताते हैं कि हिंदी क्षेत्र में लोक से जुड़े इस रिवाज को मुख्य धारा में लाने की जरूरत है।

राय जी में यह आदत थी कि वे धैर्य पूर्वक किसी की बात सुनते थे। इसका प्रमाण हमें 'पाहन नौका' निबन्ध से मिलता है। जहाँ वो बताते हैं कि रंगा मांझी नाविक थे। जब गाँव आते तो तरह तरह के नदी के किस्से सुनाते। गाँव के विद्वान लोग उन्हें मूर्ख समझते थे। लेकिन राय जी उन्हें ध्यान से सुनते। और वो लिखते भी हैं- "परन्तु उन्हीं के कारण मेरे मन में अपनी नदी गंगा की तो कोई बात ही नहीं, वह तो प्यारी रहेगी ही, किसी भी नदी के प्रति घनघोर आकर्षण है।" (7)

लोक नृत्य हो या फिर लोक नृत्य, राय जी उसके विशेष प्रेमी थे।- "किसी भी राष्ट्र के जीवन में लोक संस्कृति का अपार महत्व होता है। जब तक लोक संस्कृति जीवित है तब तक वह राष्ट्र मर नहीं सकता। लोक संस्कृति में वैसे तो सारे सामाजिक आचार-विचार, पूजा पर्व, उत्सव, गीत नृत्य से लेकर भोजन-पान तक सब कुछ टोटल वे ऑफ लाइफ आ जाता है, परन्तु इसमें गीत और नृत्य तथा पर्व उत्सव इन तीनों का विशेष महत्व है।

राय जी अपने गाँव-घर से गहरे जुड़े हुए थे, इसलिए वे मनुष्य से लेकर पक्षी तक के कलरव को शांति से सुनते थे।

"जब उतरती सन्ध्या के झुटपुट में पीपल और आम की डालियों पर शोर मचाते हुए हरे सुग्गे, बगुले, कौवे और चिड़ियों के दल के दल उतरते हैं तो उनका सहगान ऐसा लगता है मानो पूरा पेड़ एक ऑर्केस्ट्रा बन गया है।"(9)

राय जी प्रकृति का मानवीकरण करने में माहिर थे। गूलर के फूल निबन्ध में वे कटहल और गूलर के बीच काल्पनिक वार्तालाप करवाते हैं। जहाँ बाह्य से अधिक, आंतरिक सौंदर्य को सह देते हैं। वृक्षों में भी कुछ पेड़ जिसे उतनी महत्ता नहीं मिली, राय जी उसे भी अपने निबन्ध में स्थान देते हैं।-
"हवाओं के इन सारे कुतूहलों, सारे उल्लासों का कुरुक्षेत्र है यह नीम का पेड़ और माध्यम है मेरा दर्पण-सा स्वच्छ हृदय।"(10)

राय जी एक ऐसे निबन्धकार थे जो सूक्ष्म से सूक्ष्म बातों को भी विस्तार देते है। विस्तार देने से मतलब शब्दाडंबर नहीं है। बल्कि ऐसी बातें जिनसे हम परिचित तो होते हैं लेकिन विशेष ज्ञान नहीं होता। राय जी उस विशेष को पूर्ण करने में कायम होते हैं। चाहे वह बात काल्पनिक हो या लोक का कोई किस्सा उनकी विशेषता है कि वो उसे पुख्ता प्रमाण के साथ तार्किक बना देते हैं। राय जी के निबन्धों पर पांडित्य और शास्त्रीयता का आरोप लगता रहा। यह

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 11 Issue 10, October 2021
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

आरोप कतई नहीं लगता अगर उन्हें ढंग से पढ़ा गया होता। राय जी का मन किसान मन था। और उनके निबन्धों का 'लोक' या फिर निबन्धों के पात्र उपन्यास और कहानी तक के विषय से टक्कर लेने के लिए सक्षम है।

संदर्भ ग्रन्थ-

1. आचार्य रामचंद्र शुक्ल, हिंदी साहित्य का इतिहास, कमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 338

2.कुबेरनाथ राय, निषाद बाँसुरी, दूसरा संस्करण, प्रतिश्रुति प्रकाशन, कोलकाता, 2021, पृ.27

3.वही, पृ. 215

4.वही, पृ. 117

5. वही, पृ. 27

6.वही, पृ. 55

7.वही, पृ. 66

8.कुबेरनाथ राय, वाणी का क्षीरसागर,
पृ. 87

9.कुबेरनाथ राय, निवेदिता रजत जयंती अंक, पृ. 201

10. कुबेरनाथ राय, प्रिया नीलकंठी, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, 1968, पृ. 30